B.A. (Part-III) Examination, 2018

हिन्दी साहित्य

तृतीय वर्ष (प्रथम प्रश्न पत्र) : (आधुनिक काव्य)

For Non-Collegiate Candidates

Time allowed : Three Hours Maximum marks : 100

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित है।

1. निम्नलिखित पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- 10×4=40

(क) निरख सखी, ये खंजन आये;
फेरे उन मेरे रंजन ने नयन इधर मन भाये।
फैला उनके तन का आतप, मन ने सर सरसाये,
घूमें वे इस ओर वहाँ, ये हंस यहाँ उड़ छाये!
करके ध्यान आज इस जन का निश्चय ले मुस्काये,
फूल उठे हैं कमल, अधर-से ये बन्दूक सुहाये!
स्वागत, स्वागत, शरद्, भाग्य से मैंने दर्शन पाये,
नभ ने मोती वारे, लो, ये अश्रु अर्घ्य भर लाये! 10 अंक

अथवा

जाते-जाते अगर पथ में क्लान्त कोई दिखाये।
तो जा के सन्निकट उसकी क्लान्तियों को मिटाना।
धीरे-धीरे परस करके गात उत्ताप खोना।
सद्गन्धों से श्रमित जन को हर्षितों सा बनाना।।
संलग्ना हो सुखद जल के श्रान्तिहारी कंठों से।
ले के नाना कुसुम कुल का गन्ध आमोदकारी।
निधधूली हो गमन करना उद्धता भी न होना।
आते-जाते पथिक जिससे पन्थ में शान्ति पावें।। 10 अंक

(ख) पहेली सा जीवन है व्यस्त, उसे सुलझाने का अभिमान,
बताता है विस्मृति का मार्ग, चल रहा हूँ बन कर अनजान।
भूलता ही जाता दिन-रात, सजल अभिलाषा कलित अतीत,
बढ़ रहा तिमिर गर्भ में नित्य, दीन जीवन का यह संगीत 10 अंक

अथवा

छिपा रही थी मुख शशि बाला, निशि के श्रम से हो श्रीहीन,
कमल क्रोड में बन्दी था अलि, कोक शोक से दीवाना;
मूर्छित थीं इन्द्रियाँ, स्तब्ध जग, जड़ चेतन सब एकाकार,
शून्य विश्व के उर में केवल, साँसों का आना-जाना; 10 अंक

(ग) हँसा हँसकर तुम्हें बुलाया।
लो, यह स्मृति यह श्रद्धा, यह हँसी,
यह आहूत, स्पर्श-पूत भाव
यह मैं, यह तुम, यह खिलना,
यह ज्वार, यह प्लवन,
यह प्यार, यह अडूब उमड़ना-
सब तुम्हें दिया।
सब
तुम्हें दिया।

अथवा

आशामयी लाल-लाल किरणों से अन्धकार
चीरता-सा मित्र का स्वर्ग एक;
विराट् प्रकाश एक, क्रान्ति की ज्वाला एक,
धड़कते वक्षों में है सत्य का उजाला एक,
लाख-लाख पैरों की मोच में है वेदना का तार एक,
हिये में हिम्मत का सितारा एक।
चाहे जिस देश, प्रान्त, पुर का हो
जन-जन का चेहरा एक। 10 अंक

(घ) कल मैंने कहा था कि वह दुनिया
जिसे ढकने के लिए तुम नंगे हो रहे थे
उसी दिन उधर गई थी
जिस दिन हर भाषा
तुम्हारे अँगूठा-निशानकी स्याही में डूबकर
मइ गई थी
तुम अपढ़ थे
गंवार थे
सीधे इतने कि बस-
'दो और दो चार' थे 10 अंक

अथवा

बाढ़ की संभावनाएँ सामने हैं,
और नदियों के किनारे घर बने हैं।
चीड़-वन में आँधियों की बात मत कर,
इन दरख्तों के बहुत नाजुक तने हैं।
इस तरह टूटे हुए चेहरे नहीं हैं,
जिस तरह टूटे हुए ये आईने हैं।

2. अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की कविता के भाव पक्ष एवं कला पक्ष पर प्रकाश डालिए। 15 अंक

अथवा

'साकेत' काव्य के आधार पर उर्मिला का चरित्र-चित्रण कीजिए। 15 अंक

3. 'कामायनी' के काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए। 15 अंक

अथवा

'अज्ञेय के काव्य का मूल स्वर आस्था और जिजीविषा का है।' कथन के आलोक में अज्ञेय के काव्य का मूल्यांकन कीजिए। 15 अंक

4. 'मुक्तिबोध सच्चे अर्थों में जनकवि है।' कथन को स्पष्ट करते हुए उनके काव्य की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 15 अंक

अथवा

'मोचीराम कविता में वर्ग चरित्र को बहुत नाटकीय ढंग से बखूबी उभारा गया है।' कथन के आधार पर 'मोचीराम' कविता की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। 15 अंक

5. छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियों का उल्लेख सोदाहरण कीजिए। 15 अंक

अथवा

नई कविता की सामान्य विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए।